प्राचार्य की ओर से

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी। यह अपने स्थापना काल से ही पूर्वांचल का जाना–माना प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है और इसकी स्थापना का सन्दर्भ हमारे राष्ट्रीय इतिहास के साथ जोड़ता है। जब 1957 में भारत सरकार ने '1857' के शहीदों को याद करने, उनके सपनों का भारत बनाने की योजनाएँ बना रही थी, उसी समय गाजीपुर में 1857 के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि देने, उनके सपनों का भारत बनाने के लिए इस महाविद्यालय की स्थापना की गई। स्थापना काल से ही यह महाविद्यालय अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहा है।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की प्रगति व विकास का मानक होती है। वह उसे पुष्पित, पल्लवित एवं विकसित करने में मुख्य भूमिका निभाती है इसलिए दुनिया का हर विकसित एवं विकासशील राष्ट्र शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। प्राचीन काल से लेकर आज तक किसी भी समाज की श्रेष्ठता के पीछे तत्कालीन शिक्षा पद्वति का ही श्रेय रहा है। इस ऐतिहासिक सच्चाई को स्वीकार करते हुए यह महाविद्यालय व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

यह महाविद्यालय आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के प्रति सतर्क रहकर किसी भी आधुनिक विषय को कैम्पस में आरम्भ करने में सक्रिय रहता है। आज महाविद्यालय में छः संकाय – भाषा, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, शिक्षक शिक्षा, विज्ञान, कृषि एवं वाणिज्य के बीस विषयों में स्नातक एंव 17 विषयों में स्नातकोत्तर की कक्षाएँ संचालित होती हैं। विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर विभागों में शोध–छात्र पी–एच.डी. डिग्री के लिए शोधरत है।

छात्रों को उनके पाठयक्रमों के अतिरिक्त अन्य क्रिया–कलापों – एन.सी.सी. (थल एवं नेवी), एन.एस.एस. , रोवर्स/रेन्जर्स, खेल–कूद, सांस्कृतिक–कार्यक्रमों, विचार–गोष्ठी, स्वतन्त्र लेखन इत्यादि के माध्यम से उनको बहुमुखी विकास करने का पूरा मौका महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। महाविद्यालय परिसर में भारत सरकार द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित है जो गाजीपुर जनपद के किसानों एवं कृषि संकाय के छात्रों को लाभ पहुँचा रहा है। कैम्पस में रेडियो स्टेशन 2004 से स्थापित है जो 25 किलोमीटर की परिधि में ट्रांजिस्टर द्वारा एफ.एम. बैण्ड पर छात्रों एवं जनता को शिक्षित एवं जागरूक करने का कार्य करता है। गाजीपुर जनपद का तापमान मापन का कार्य महाविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा किया जाता है। महाविद्यालय परिसर वाई–फाई सुविधा से युक्त है। महाविद्यालय की कम्प्यूटराइज्ड एवं INFLIB NET से युक्त लाईब्रेरी विद्वानों को आकर्षित करती है।

संस्था के उच्च शैक्षिक स्तर एवं परिसर में उपलब्ध सुविधाओं के सत्यापन के लिए यू.जी.सी. के तत्वावधान में गठित राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बेंगलूरू द्वारा नामित पीयर टीमों ने फरवरी 2006 एवं अक्टूबर 2015 में निरीक्षण कर सम्मानित रैंक प्रदान किया है।

इस महाविद्यालय के छात्रों का स्वर्णिम इतिहास रहा है। डॉ. मंगला राय (डी.जी., आई.सी.ए.आर), डॉ.ए. एन. राय (पूर्व चेयरमैन, नैक), श्री जय सिंह (आई.ए.एस) इत्यादि इस महाविद्यालय के छात्र रहे हैं, साथ ही महाविद्यालय के छात्र बी0एच0यू0, आई0सी0ए0आर0 के शोध संस्थान व उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इस महाविद्यालय के उत्कर्ष में योग्य शिक्षकों का विशेष योगदान रहा है। डॉ. विवेकी राय एवं डॉ0 जितेन्द्र नाथ पाठक आदि शिक्षकों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध किया जा रहा है। इन शिक्षकों के अतिरिक्त महाविद्यालय योग्य शिक्षकों से भरा है।

इस महाविद्यालय की स्थापना का सपना तत्कालीन जिलाधिकारी श्री कुशल पाल सिंह ने देखा था, जिसे मूर्तरूप में साकार करने एवं वर्तमान स्वरूप तक पहुँचाने का श्रेय इस महाविद्यालय के संस्थापक सचिव/प्रबन्धक स्व0 श्री राजेश्वर प्रसाद सिंह जी को है, जो इस महाविद्यालय के वास्तविक शिल्पी है। वर्तमान सचिव/प्रबन्धक श्री अजीत कुमार सिंह, अपर महाअधिवक्ता उत्तर प्रदेश शासन, प्रयागराज, इस महाविद्यालय को नई ऊँचाई देने एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के लिए सक्रिय है।

अन्त में इस प्रांगण में आपके आगमन का स्वागत करता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

प्रोफेसर (डॉ0) राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय

प्राचार्य

परिचय

महाविद्यालय एवं पाठ्य विषय

वाराणसी से 75 किलोमीटर पूरब, वाराणसी–गोरखपुर हाईवे–31 से लगे पतीत पावनी गंगा के तट पर अवस्थित तथा अपने ऐतिहासिक एवं प्राचीन गौरव के लिए प्रसिद्ध, महर्षि विश्वामित्र के पिता राजा गाधि द्वारा बसायी गयी नगरी, वर्तमान नाम गाजीपुर नगर में स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना जुलाई, 1957 में हुई। यह महाविद्यालय गाजीपुर सिटी (पूर्वोत्तर रेलवे) स्टेशन से तीन किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम रवीन्द्रपुरी (गोराबाजार) में स्थित है।

यह महाविद्यालय सर्वप्रथम आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से 1957 में सम्बद्ध हुआ था, किन्तु 1958 में गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की स्थापना के पश्चात उससे सम्बद्ध हुआ तथा 1987 में पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के स्थापित होने पर यह महाविद्यालय वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर से सम्बद्ध हो गया। यहाँ संस्थागत एवं व्यक्तिगत अध्ययन के साथ दूरस्थ शिक्षा के अध्ययन केन्द्र के रुप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, तथा उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज अध्ययन केन्द्र है। समस्त शैक्षणिक कार्य इन विश्वविद्यालयों के अध्यादेश, नियम–उपनियम तथा निर्धारित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संचालित एवं सम्पन्न होते है। महाविद्यालय में निम्नांकित कुल छः संकाय हैं–

संचालित पाठ्यक्रमः–

संकाय	स्नातक	स्नातकोत्तर
भाषा संकाय	1. हिन्दी 2. अंग्रेजी 3. संस्कृत 4. उर्दू	1. हिन्दी 2. संस्कृत 3. अंग्रेजी (स्ववित्तपोषित)
कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय	1. इतिहास (मध्यकालीन एवं आधुनिक) 2. भूगोल 3. राजनीति शास्त्र 4. समाज शास्त्र 5. मनोविज्ञान 6. रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन (सैन्य विज्ञान) 7. अर्थशास्त्र 8. संगीत (सितार–वादन) 9. गणित 10. गृहविज्ञान (स्ववित्तपोषित)	1. मनोविज्ञान 2. अर्थशास्त्र 3. इतिहास (मध्यकालीन एवं आधुनिक) 4. समाजशास्त्र 5. राजनीति शास्त्र (स्ववित्तपोषित) 6. भूगोल (स्ववित्तपोषित) 7. गृह विज्ञान (स्ववित्तपोषित)
विज्ञान संकाय	1. जीव विज्ञान ग्रुप (B.Z.C.) 2. गणित ग्रुप (P.M.C.) 3. बी0एस–सी (फिजिकल एजूकेशन, हेल्थ एजू. एवं स्पोट्स)	1. वनस्पति विज्ञान 2. गणित 3. पर्यावरण विज्ञान (स्ववित्तपोषित) 4. रसायन विज्ञान (स्ववित्तपोषित)
कृषि संकाय	1. बी0एस–सी(कृषि) B.Sc (Ag.)	1. आनुवंशिक एवं पादप प्रजनन (स्ववित्तपोषित) 2. उद्यान विज्ञान (स्ववित्तपोषित)
शिक्षक शिक्षा संकाय	(बी0एड0, द्विवर्षीय पाठयक्रम)	
वाणिज्य संकाय	1. बी0काम0 (स्ववित्तपोषित)	1. एम. काम.(स्ववित्तपोषित)